

चित्त पुं. (तत्.) 1. अंतःकरण का भेद, अंतःकरण की एक वृत्ति 2. मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार-इन चार वृत्तियों में से एक 3. जी, मन, दिल 4. वह मानसिक शक्ति जिससे धारण, भावना उत्पन्न होती है मुहा. चित्त चढ़ना- ध्यान पर चढ़ना; चित्त उतरना- जी न लगना, विरक्ति होना; चित्त चुराना- मन को मोहना; चित्त से न टलना- बराबर ध्यान में बने रहना, किसी को आकर्षित करना, विचारित 5. अनुभूत या अनुभवगम्य 6. इच्छित, चाहा हुआ 7. इंद्रिय गम्य, इंद्रिय गोचर।

चित्तचारी वि. (तत्.) 1. दूसरे की इच्छानुसार आचरण करने वाला 2. जिसका मन चलायमान रहता हो।

चित्तप्रसादन पुं. (तत्.) मैत्री, करुणा, हर्ष, उपेक्षा आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा योग में होने वाला चित्त का संस्कार जैसे- किसी को दुखी देखकर मित्रभाव रखना।

चित्तभंग पुं. (तत्.) बदरिकाश्रम के एक पर्वत का नाम।

चित्तभूमि पुं. (तत्.) योग में चित्त की अवस्थाएँ। विशे. व्यास जी के अनुसार ये अवस्थाएँ पाँच हैं, क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध, समाधि की भी चार भूमियाँ हैं, मधुमती, मधुप्रतीका, विशोका और ऋतंभरा।

चित्तभेद पुं. (तत्.) 1. विचार संबंधी भेद 2. चंचलता, अस्थिरता।

चित्तभ्रम पुं. (तत्.) एक प्रकार का सन्निपात जिसमें संताप, मोह, विकलता, हँसना, गाना, नाचना, धतूरा खाए हुए जैसी अवस्था आदि उपद्रव होते हैं।

चित्तरसारी स्त्री. (तद्.) चित्रसारी।

चित्तराग पुं. (तत्.) कामना, अनुराग।

चित्तल पुं. (तद्.) एक प्रकार का हिरन, मृग, चीतल।

चित्तविकार पुं. (तत्.) विचार या भाव का परिवर्तन।

चित्तविक्षेप पुं. (तत्.) योग में बाधक बनने वाली चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविद पुं. (तत्.) 1. वह जो चित्त की बात जाने 2. बौद्ध दर्शन के अनुसार चित्त के भेदों और रहस्यों को जानने वाला पुरुष।

चित्तवृत्ति स्त्री. (तत्.) 1. चित्त की गति, चित्त की अवस्था 2. विचार 3. मनःस्थिति, भाव।

चित्तवेदना स्त्री. (तत्.) चित्त की पीड़ा दुख या वेदना।

चित्तशुद्धि स्त्री. (तत्.) विकार रहित चित्त होने का भाव, निर्विकार चित्त होना।

चित्तहारी वि. (तत्.) मन को लुभाने वाला।

चित्ता पुं. (तत्.) औषध, पौधा-विशेष।

चित्ताकर्षक वि. (तत्.) मनमोहक, चित्त को आकर्षित करने वाला।

चित्तापहारक वि. (तत्.) 1. चित्त को चुराने वाला 2. मनोहर, सुंदर, चित्तहारी।

चित्ताभोग पुं. (तत्.) 1. संपूर्ण चेतना 2. आसक्ति।

चित्तासंग पुं. (तत्.) प्रेम, अनुराग, चित्त की आसक्ति।

चित्ति स्त्री. (तत्.) 1. प्रज्ञा, बुद्धि, वृत्ति, चिंतन 2. ख्याति 3. कर्म 4. अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम।

चित्ती स्त्री. (तत्.) 1. छोटा-सा दाग, धब्बा, या चिह्न, बुंदकी मुहा. चित्ती पड़ना- 1. खरी सेंकने पर रोटियों में जगह-जगह जलने जैसा काला दाग पड़ जाना या पड़ना 2. कुम्हार के चाक के किनारे का वह गड़ढा जिसमें डंडा डालकर चाक को घुमाया जाता है 2. गुनिया 3. अजगर की जाति का एक मोटा साँप जिसके शरीर पर चित्तियाँ होती हैं, चीतल।

चित्तोद्रेक पुं. (तत्.) 1. विरक्ति का भाव 2. परेशानी 3. व्याकुलता 4. चित्त की अशांति 5. अहंकार।